International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 03, March 2022
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

# मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और भारत का पुनर्निर्माण

**डॉ0 मो0 इमरान खॉ**
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
मुमताज़ पी0पी0 कालेज, लखनऊ

समकालीन भारतीय राजनीति व्यवस्था में प्रत्येक भारतीय अपने को ठगा हुआ महसूस कर रहा है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोन में जनता ने अपना सब कुछ देश के लिए न्योछावर कर दिया जिसके फलस्वरूप भारत स्वतंत्र हुआ किन्तु आज़ादी के सात दशक बाद भी भारतवासियों के वे सपने पूरे नहीं हुए जो स्वतंत्रता सेनानियों ने देखे थे। क्योंकि आज भी भारत में जातीय, साम्प्रदायिक, भाषागत संघर्ष हो रहा है। दुःखद यह है कि राजनेता खुद उक्त संघर्ष को बढ़ाने में अपना भविष्य देख रहे हैं।

आज ऐसे राज्य–निर्माता की जरूरत है जो भारत के विकास और राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता को सुदृढ करने के लिए प्रतिबद्ध हो। पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में यह संकट है कि कैसे विभिन्न मत के मानने वाले प्रेम–सौहार्द से रहें। हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के समय पाकिस्तान जाने वाले लोगों से मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने कहा था एक समय ऐसा भी आएगा जब पाकिस्तान के क्षेत्रीय लोग अपने को बंगाली, पंजाबी, सिन्धी, ब्लूची और पठान जैसी विभिन्न कौमों (उपराष्ट्रीयताओं) में बांट लेंगे, ऐसे में भारत से गए मुसलमानों की क्या स्थिति होगी? मौलाना आज़ाद की कही हुई बातें आज सच हो रही हैं। पाकिस्तान के क्षेत्रीय लोगों में संघर्ष बढ़ता जा रहा है ऐसे में सबसे खराब स्थिति मोहाजिरों (भारत से गए मुसलमानों) की है। मौलाना आज़ाद का

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

जिन्ना के दो राष्ट्रवादी सिद्धान्त में विश्वास नहीं था, वह भारतीयता में ही विश्वास करते थे। इसके लिए उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में 'राष्ट्रीय एकता' के लिए अपने को समर्पित कर दिया।

18 जनवरी 1920 को हक़ीम अज़मल खाँ के घर पर गाँधी जी और मौलाना आज़ाद के बीच कई घंट तक वार्तालाप हुआ। आज़ाद ने गाँधी जी के असहयोग के कार्यक्रम को पूर्ण समर्थन दिया। कांग्रेस के कई नेताओं ने 'असहयोग' का समर्थन बाद में किया। जिन्ना जो खुद कांग्रेस के समर्पित नेता थे 'असहयोग' कार्यक्रम से असहमति जतायी और कांग्रेस छोड़ दी। उधर मौलाना आज़ाद जिनका जन्म 11 नवम्बर 1888 को अरब की धरती के 'मक्का' शहर में हुआ, वे पूरी तरह इस्लाम में विश्वास रखते थे। उन्होंने अपनी धार्मिक शिक्षा के आधार पर ही भारतीय स्वतंत्रता के सुनहरे भविष्य की कल्पना की।

मौलाना आज़ाद अपने परिवार के साथ 1898 में भारत आए कलकत्ता में जब उनकी उम्र 17 वर्ष की थी साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में एक देशभक्त के रूप में उभर कर सामने आए। उनमें विश्व में फैलते हुए पश्चिमी उपनिवेशवाद के विरूद्ध इस्लामी एकजुटता को बढ़ावा देने और विश्व में इस्लामी समुदाय का उदार और विवेकपूर्ण रूप प्रस्तुत करने का उत्साह था। उन्होंने उर्दू भाषा में 'अलहिलाल' और 'अलबिलाल' पत्र निकाला, इसके द्वारा जनता में स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने की शिक्षा दी। उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम एकता को आजादी और राष्ट्रीय पुनर्निमार्ण के लिए आवश्यक माना।

वे इस्सलाम की बुद्धिवादी और भारत की करूणा प्रधान विरासत के संयोग के अनमोल उदाहरण हैं। उन्होंने परम–सत्य की ओर ले जाने वाले विभिन्न मार्गो में वेदान्त

दर्शन के मौलिक दृष्टिकोण को इस्लाम के वहादत–ए–दीन (एक में विश्वास) और सुल्हे–कुल (विश्वशांति) सिद्धान्तों के साथ मिला दिया। उन्होंने कुरान के संदेश 'समूची मानव जाति एक ही कौम है' में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की प्रतिध्वनि को सुना था। वास्तव में वह सूफ़ी परिवार से ही आए थे। वह अलौकिक और लौकिक सभी प्रकार के मामलों को समझाने के लिए बुद्धि के प्रयोग पर बल देते थे। वह कुरान की 'सूरह अल–फातिहा' की अपनी टीका को यह कहते हुए समाप्त करते हैं कि 'इहदेनस–सीरातल मुस्तकीम' (सीधे रास्ते पर चला) तो वह रास्ता है जो किसी विशेष कौम के लिए न होकर सम्पूर्ण मानवजाति के प्रति वचनबद्धता ही कुरान की मूल भावना है।

इस भावना से प्रेरित होकर ही भारतीयों की गरिमा के लिए भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े उन्हें अपना एक धार्मिक साथी (महात्मा गाँधी) भी मिल गया था। उन्होंने भारतीय मुसलमानों से कहा कि हिन्दुओं के लिए स्वतंत्रता एक राजनीतिक कार्य हो सकता है, किन्तु हमारे लिए यह धार्मिक कर्तव्य है कि देश को आज़ाद कराएं। इस तरह उन्होंने खिलाफत और असहयोग आन्दोलन को मिला दिया और गाँधी जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगे। उन्हें 35 वर्ष की आयु में ही सन् 1923 में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति का अध्यक्ष चुना गया।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय मौलाना आजाद को भी गिरफ्तार कर लिया गया, वे जेल में ही थे कि उनकी पत्नी जुलेखा बेगम का 19 अप्रैल 1943 को निधन हो गया। अंग्रेज हुकूमत ने पेरोल पर मौलाना को छोड़ने की बात की, पंडित नेहरू ने मौलाना से पेरोल पर रिहाई की बात मानने को कहा लेकिन उनकी खुद्दारी को यह पंसद नहीं आया, वह अपनी पत्नी की अन्तिम यात्रा में शामिल न हो सके। जुलेखा बेगम की बीमारी और उनकी मृत्यु के समय अंग्रेजी सरकार द्वारा बिना शर्त मौलाना को रिहा न करने से भारतीयों में आक्रोश था। मुस्लिम लीग जो मौलाना

आज़ाद के विचारों की विरोधी थी उसने भी जुलेखा बेगम की मृत्यु पर कलकत्ता में शोक सभा की। इस शोक सभा में 'इब्राहीम' ने शोक गीत पढ़ा जिसकी कुछ पंक्तियाँ निम्न हैं :–

''मरते दम भी अपने बेगानों से जो मिलने न दें,
यूं किसी भी मुमलिकत (देश) में जबर का आईन (संविधान) न हो।''
''जब मुरतब होगी मुस्तकबिल (भविष्य) में तारीखे वतन
हरफे खूनी से मरतब होगा ये किस्स–ए–कलाम।''

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद अन्तिम समय तक देश का विभाजन नहीं चाहते थे किन्तु जब देश का विभाजन हो ही गया तो अब उनका मिशन भारत का विकास हो गया। वह आज़ाद भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री बने। वह उस शिक्षा को अधूरी मानते थे जिसमें दर्शन, विज्ञान धर्म और तर्क न हो। वह अपने दर्शन में पाँच सार्वभौम मूल्यों को एकत्र करते हैं–मारूफ (अच्छाई) हक़ (सत्य), जमाल (तेजस्विता) प्रेम और न्याय। उक्त तत्व जब मनुष्य में हों तो उसके सार्वभौम चरित्र का निर्माण होता है। उन्होंने अध्यापकों द्वारा छात्रों में तर्क करने की शक्ति पैदा करने के लिए कहा। शिक्षामंत्री रहते हुए उन्होंने भारतीय सभ्यता की विरासत और आधुनिक शिक्षा में सुन्दर समन्वय किया, फलस्वरूप भारत विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में आगे बढ़ा तथा उन्हीं के हमनामी ए0पी0जे0अब्दुल कलाम ने इसको नई ऊँचाईयों तक पहुँचाया। अतः दोनो 'कलाम' भारत पुनर्निर्माण में अहम योगदान रहा है। स्वतन्त्रता उपरान्त भारतीयों ने मौलाना आज़ाद के विचारों को न पढ़ा और न समझा आज मुसलमानों सहित सभी भारतवासियों को मौलाना के दर्शन से शिक्षा लेकर राष्ट्र की समस्याओं को हल करना चाहिए तभी मौलाना आज़ाद के ख्वाब को हकीकत में बदला जा सकता है। ऐसा करने से ही भारत विश्व गुरू बनने की ओर अग्रसर होगा।

सन्दर्भ सूची :–


**1. अलहिलाल और अलबिलाल–मौलाना अबुल कलाम आज़ाद**

**2. खिलाफत टू पर्टिशन–शाकिर मोईन, नई दिल्ली 1976**

**3 भारत का स्वतंत्रता संघर्ष–प्रो0 विपिन चन्द्रा**

**4. इण्डिया विन्स फ्रीडम–मौलाना अब्बुल कलाम आज़ाद**